

नाम्ना विद्या dass.: जीमूतवाक्यं तं च नाम्ना स विदधे KATHA. 22, 23. तदा स्वनामपरित्यागं करोमि so v. a. dann will ich nicht heissen, wie ich heisse, PAKKAT. 5, 3 (ed. orn. 2, 3). नामन् Personennamen im Gegens. zu गोत्र Geschlechtsname KAC. zu P. 8, 2, 83. संतप्तायसि संस्थितस्य पत्न्यो नामापि न ज्ञायते nicht einmal der Name so v. a. nicht die geringste Spur BHART. 2, 57. हि° adj. CAT. Br. 3, 6, 2, 24. TB. 2, 7, 27, 1. KAT. Cr. 22, 8, 26. पाप° CAT. Br. 13, 8, 1, 16. मेघनामन् adj. alles was Wolke heisst, jedes Wort für Wolke AK. 2, 4, 5, 25. Am Ende eines adj. comp. f. नाम्नी CAT. Br. 5, 3, 8, 14. 10, 5, 2, 2. M. 3, 9. R. 1, 6, 26. ŚH. D. 19, 2. ÇUK. 44, 2. Schol. zu ÇIK. 9, 6. selten नामन्, z. B. R. 1, 6, 25. TRIK. 1, 1, 6. — 3) Name so v. a. Person, Wesen: गृणीमसि त्वेषं रुद्रस्य नामं Rudra's fürchtbares Wesen RV. 2, 33, 8. 35, 11. 7, 100, 3. मरुतः कवयश्चरु नामं 3, 54, 17. 16. 56, 4. 38, 4. यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि । तत्र कृद्धानि गामय 5, 5, 10. देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्करोति 9, 95, 2. विद्या ते नामं परमं गुह्यं यत् wir kennen dein höchstes Wesen, das verborgene 10, 45, 1. यत् सोमादीभ्यः नामं VS. 7, 2. 10, 20. विश्वं त्वनां विभूतो यद् नामं alle Wesen RV. 1, 185, 1. — 4) Name so v. a. Geschlecht, Art: दासस्य नामं चित् RV. 5, 33, 4. 10, 23, 2. अर्थ्यं नामं 49, 3. मारुतम् 7, 57, 1. आदित्यम् 10, 77, 3. तत्र कुष्ठस्य नामान्युत्तमानि विभेजिरे die besten Arten des Costus, den besten C. AV. 5, 4, 8. — 5) in der Gramm. Nomen: नामाख्याते Nir. 1, 1. तन्नाम येनाभिधाति सन्नम् RV. PAK. 12, 5. 8. VS. PAK. 8, 52. 54. 55. 59. 60. AK. 3, 6, 3, 15. TRIK. 1, 1, 2. H. 1. नामलिङ्गानुशासन in der Unterschr. am Ende von AK. — 6) in der Mm. Wesen (Gegens. गुण Accidens) GOLDSTÜCKER bei BURN. Intr. 502, N. 2. — 7) = उदक Wasser NIGH. 1, 11. — 8) नाम adv. a) Namens (प्राकाशे AK. 3, 4, 23, 13. H. an. 7, 89. MD. avj. 53. 54) RV. 1, 53, 7. स हं श्रुत इन्द्रो नाम देवः 2, 20, 6. इक्ष्तिर्नामं वो माता 10, 97, 9. विष्मो नाम तारके AV. 2, 8, 1. 3, 26, 1. को नामासि VS. 7, 29. असौ नामाकाम्सि M. 2, 122, 3. 127. 10, 8. MBH. 8, 1413. N. 1, 1. R. 1, 1, 10. 2, 49, 9. RAGH. 1, 11. BHART. 3, 11. HIT. 14, 16. KATHA. 13, 58. Zum Ueberfluss wird noch नामतस् und नाम्ना hinzugefügt; s. u. नामतस् und oben u. 2. — b) nämlich; freilich, wirklich, allerdings; gerade: चक्राणि हि सध्यंद्वाभं भद्रम् RV. 1, 108, 3. नेति क्षितीः सुभगो नाम पुष्यन् 5, 37, 4. श्रुतं नामं भेजिरे 5, 37, 5. 1, 68, 4 (2). मो धुरिन्द्रं नाम देवता 10, 49, 2. 28, 12. दुर्यो नाम पत्यते 2, 37, 2. अज्ज्ञो धर्मो कृविरेस्मि नामं 3, 26, 7. 8, 46, 14. AV. 3, 24, 2. 5, 9, 7. 7, 45, 1. 12, 1, 54. VS. 1, 31. 9, 5. CAT. Br. 14, 5, 1, 18. KBAND. UP. 6, 8, 1. ICOP. 3. पिताचार्यः सुहृन्माता भार्या पुत्रः पुरोहितः । नादयो नाम राज्ञो ऽस्ति यः स्वर्धमे न तिष्ठति ॥ M. 8, 335. JAGH. 1, 357. M. 3, 121. MBH. 1, 7971. भारे हि सुमहास्तात राज्ञं नाम सुदुष्करम् 12, 3450. R. 1, 53, 21. पितुर्हि वचनं कुर्वन्न कश्चिन्नाम क्षीयते 2, 21, 36. सुता भूमावनाथेव दुःखिता नाम भाविनी R. GORR. 2, 8, 20. श्रूतं हि नाम पुरुषस्यासिंहासनं राज्यम् MRK. 33, 2. 43, 14. 63, 6. भर्ता नाम परं नार्याभूषणम् N. 16, 15. MĀLAV. 72. BHART. 1, 73. 2, 17. 47. ÇIK. 8, 12. 35, 20. VIKR. 35. VID. 58. PAKKAT. I, 226. RĀGA-TAR. 3, 284. आश्चर्यमन्धो नाम पुत्रं द्रव्यति, चित्रं बधिरो नाम व्याकरणाध्येष्यते P. 3, 3, 151. Sch. Vor. 23, 15. Dieses ist das नाम विस्मये H. an. MD. Ein ähnliches Beispiel führt BHAR. zu AK. an: अन्धो नाम गिरिमारोहति ÇKDa. यथापि नाम — अपि तु खलु SADDE. P. 4, 29, b. — c) vielleicht, etwa (सभाव्ये AK. H. an. MD.): इह नाम सीता भविष्यति

IV. Theil.

BHAR. zu AK. पूर्व दृष्टस्त्वया कश्चिद्धर्मज्ञो नाम N. 24, 10. शोचतो रुदतश्चैव यदि नाम मृतः पुनः । संजीवेत्स्वजनः कश्चिदनुशोचमे सर्वशः ॥ R. GORR. 2, 85, 13. BHART. Suppl. 21. KUMĀRAS. 3, 19. कृताभिर्मशीमनुमन्यमानः सुतो त्वया नाम मुनिर्विमान्यः ÇIK. 116. 117, v. l. 140. 151. HIT. Pr. 40. — d) besondere Erwähnung verdienen folgende Verbindungen: α) nach einem pron. interr., wo es sich durch doch, wohl wiedergeben lässt: किं नाम, कथं नाम, कदा नाम, को नाम u. s. w. MBH. 3, 10246. fg. 10272. fg. 10275. R. 2, 1, 24. 23, 8. 44, 17. R. GORR. 2, 15, 20. 3, 49, 36. 6, 88, 18. RAGH. 16, 82. BHART. 1, 21. 81. 2, 44. ad ÇIK. 94. KATHA. 4, 133. 16, 9. PAKKAT. I, 351. 165, 6. HIT. I, 104. II, 144. 154. RĀGA-TAR. 3, 257. BRAHMA-P. in LA. 49, 12. BĀG. P. 1, 18, 14. 4, 26, 15. PRAB. 29, 13. 33, 17. P. 3, 3, 143. Sch. किमिव नाम ÇIK. 97, 15. कथमिदं नाम 68, 17. Hierher gehört das नाम कुत्सने oder कुत्सायाम् AK. H. an. MD. Als Beispiel führt BHAR. zu AK. an: को नामायं सवितुरुदये स्वायमेवं विद्यते. ÇKDa. — β) अपि नाम am Anf. eines Satzes vielleicht; s. u. अपि 13. Wir tragen hier noch einige Stellen nach: अपि नाम प्रसादं नः स कुर्यात् R. GORR. 2, 97, 6. VIKR. 47, 3. अपि नाम सा सुतनुरस्योपत्यकायामुपलभ्यते 63, 18. अपि नामैवं स्यात् 86, 12. Sollte nicht vielleicht oder ach wenn doch (vgl. अपि 11) würde an den meisten Stellen auch passen. Wenn अपि नाम nicht am Anfange des Satzes steht, ist die Bedeutung eine andere; so giebt z. B. BHAR. zu AK. für den Gebrauch von नाम in der Bed. क्रोधे Zorn, Aerger (AK. H. an. MD.) das Beispiel ममापि नाम दशाननस्य पौरभिभवः; dazu stimmt genau ममापि नाम सत्तैरभिभूयते गृहाः ÇIK. 93, 5, v. l. In den Stellen तन्ममापि नाम शर्विलकस्य भूमिष्ठे द्रव्यम् MRK. 49, 4 und ममापि नाम शर्विलकस्य रत्तिणः 50, 18 werden die Worte nicht im Aerger gesprochen. — γ) मा नाम vielleicht (ach wenn doch nicht): अये पदशब्द इव मा नाम रत्तिणः MRK. 50, 12. अये चिरयति मैत्रेयः । मा नाम वैल्लव्यादकार्यं कुर्यात् 54, 24. मा नाम ते मध्याह्नाकार्तापच्छिन्नदृष्टेः स्थावरकस्य सकञ्चुकां क्रायां दृष्ट्वा धातिरुत्पन्ना 119, 19. damit nicht etwa: त्रिनेत्रस्य लङ्घनम् । एकस्य रत्नेर्मा नाम मृत्युं तस्माद्वाप्यसि KATHA. 20, 65. — δ) ननु नाम doch, gewiss: ननु नामाकमिष्टा किल तव N. 12, 12, 11. 4. MBH. 14, 1836. R. 4, 24, 37. 34, 20. 6, 95, 3. — ε) nach einem imperat. immerhin: उदयतु नाम मेघा भवतु निशा वर्षमविरतं पततु । गणयामि नैव सर्वं दयिताभिमुखेन हृदयेन ॥ MRK. 75, 6. BHART. 1, 15. अतनुषु विभवेषु ज्ञातयः सन्तु नाम त्वयि तु परिसमाप्तं बन्धुकृत्यं प्रजानाम् ÇIK. 103. करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्ततः । फलं पुनस्तदेवाय पद्विधेर्मनसि स्थितम् ॥ HIT. II, 12. Dieses ist das नाम उपगमे und अयुपगमे AK. H. an. MD. Nach BHAR. zu AK. soll darunter eine mit Unwillen erfolgende Einwilligung gemeint sein; als Beispiel giebt er एवं नामास्तु. — H. an. kennt noch die Bed. श्रलीक, MD. विकल्प und स्मरणा. — Vgl. अ°, त्रिणामन्, दुर्णामन्, पञ्च°, पुरु°, मरु°, मातु°, यथानाम, विश्व°, स°, सप्त°, सर्व°, सकृन्, सुकृवीतु°.

नामनामिक unter den Beiwörtern Vishnu's MBH. 12, 12864 (S. 818, Z. 8 v. u.).

नामनिधान (नामन् + नि°) n. Sammlung der Nomina, Titel eines Wörterbuchs COLEBR. Misc. Ess. II, 20. Verz. d. Oxf. H. 182, b.

नामनियतप्रवेश (नामन्-नि°-प्र°) m. N. eines Samādhi VJUTR. 19.

नामपारायण (नामन् + पा°) n. vollständige Sammlung der Nomina. Titel eines Wörterbuchs COLEBR. Misc. Ess. II, 16. — Vgl. धातुपारायण.